موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 4

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त4

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के कुछ विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

16.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह सारे पवित्र चीजों को ह़लाल(वैध)और सारे अस्वस्थ और गुणहीन चीज को ह़राम(अवैध)बतलाया है,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी के गुण का उल्लेख करते हुए फरमाया:

(ويُحِل لهم الطيبات ويُحرم عليهم الخبائث)

अर्थात:और उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल(वैध)तथा मलीन चीजों को हराम(अवैध)करेंगे।

17.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह मानवी(आंतरिक)पवित्रता की ओर बोलाती है,अतः इसकी शिक्षाओं से आत्मा एवं प्रणों का शुद्धीकरण होता और **ह्रदयों** को पवित्रता प्राप्त होती है,अल्लाह का कथन है:

(هو الذي بعث في الأميين رسولا منهم يتلو عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة)

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अर्थातःवही है जिस ने निरक्षरों में एक रसूल भेजा उन्हीं में से।जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतों और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक(कुर्आन)तथा तत्वदर्शिता(सुन्नत)की।

उदाहरण स्वरूप नमाज़ ही को लेलें,इससे आत्मा को पवित्रता एवं शांति प्राप्त होती है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(ए बेलाल!नमाज़ की इक़ामत कहो,हमें उससे शांति पहुंचाओ)[2] अर्थात नमाज़ के द्वारा शांति पहुंचाओ,आप उनको अज़ान व इक़ामत का आदेश देते ताकि आप को शांति मिले।

ज़कात(दान) के द्वारा धन पवित्र होता,आत्मा को कंजूसी से पवित्रता प्राप्त होती है,इसके द्वारा अल्लाह की ओर से दिए गए नेमतों(आशीर्वादों)का आभार व्यक्त किया जाता है,और आभार, **हृदय** की पवित्रता का माध्यम है,ज़कात से फकीर व मिस्कीन की आवश्यक्ता पूरी होती है,फक़ीरों एवं धनी लोगों के बीच ईर्ष्या समाप्त होता है,इस प्रकार पूरा समाज पवित्र हो जाता है।रोज़ा(उपवास)से यह भाव पैदा होता है कि समस्त कार्यों को केवल अल्लाह के लिए ही किया जाए,अतः **हृदय** दिखावा से पाक हो जाता है,अधिक खाने पीने से आत्मा के अंदर जो अहंकार,घमंड जन्म लेलेता है,रोज़ा के द्वारा उससे भी वह पवित्र हो जाता है।

ह़ज(तीर्थयात्रा)में सारे ह़ाजी एह़राम(वह वस्त्र जो तीर्थयात्री तीर्थयात्रा के समय पहनता है)पहनते हैं,जिसके द्वारा उनके अंदर से विलासिता का भावना समाप्त हो जाता है,ह़ज के पवित्र स्थानों में एक जैसे खड़े होते हैं,एक दूसरे से परिचित होते और आपसी भाईचारा पैदा होता है,एक जैसी आज्ञाकारिता के द्वारा अल्लाह की प्रार्थाना करते हैं,अतः उनके आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

अल्लाह का ज़िर्क तो आत्माओं की पवित्रता का सबसे बड़ा मैदान है,अतः कुरान का सस्वर पाठ,सुबह शाम की प्रार्थनाएं और नमाज़ के पश्चात के अज़कार का नियमित रूप से पालन,आत्मा की पवित्रता व शुद्धिकरण के सर्वश्रेष्ठ कारण हैं।

इस्लाम का नैतिक व्यवस्था आत्माओं की शुद्धिकरण का सर्वश्रेष्ठ कारण है,जैसे माता पिता का आज्ञापालन,संबंधों को जोड़ना,परिवार और पड़ोसियों के साथ सुन्दर व्यवहार और दुर्बल व गरीबों की सहायता।

---

[2] इसे अबू दाउूद(4985)और अह़मद(364/5)ने वर्नण किया है और अल्बानी ने सही़ कहा है

इस्लामी शिक्षाओं में आत्माओं की पवित्रता एवं शुद्धिकरण की जो विशेषताएं पाई जाती हैं,उनके कुछ उदाहरण थे जो आपके समक्ष प्रस्तुत किए गए।

18.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह शारीरिक पवित्रता का भी न्योता देती है,अतः शुक्रवार के दिन और जनाबत(संभोग अथवा शीघपतन के कारण अपवित्र हो जाना)के पश्चात स्नान करने,वज़ू के लिए पवित्रता प्राप्त करने,(मूत्र एवं मल के उत्सर्जन के पश्चात)जल एवं पत्थर से पवित्रता प्राप्त करने,और फितरी(स्वाभाविक)सुन्नतों पर अ़मल करने का आदेश देती है,जैसे मूंछ कतरना,दाढ़ी छोड़ना,नाखून काटना,कांख के बाल उखाड़ना और जघन के नीचे के बाल साफ करना।[3]

19.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह आसानी पैदा करती और कठिनाई को दूर करती है,अल्लाह तआ़ला का कथन हैः

(يريد الله بكم **اليسر** ولا يريد بكم العسر)

अर्थातःअल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है,तुगी(असुविधा)नहीं चाहता।

अल्लाह ने यह भी फरमायाः (فاتقوا الله ما **استطعتم**)

अर्थातः तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके।

और फरमायाः (لا يكلف الله نفسها إلا وسعها)

अर्थातःअल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक(दायित्व का)भार नहीं रखता।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(...जब मैं तुम्हें किसी चीज के पालन करने का आदेश दूं तो अपनी शक्ति के अनुसार उसका पालन करो)।[4]

20.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह एक सत्य धर्म है,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह को सर्वाधिक वह धर्म पसन्द है

---

[3] देखेंःबोखारी(5889)और मुस्लिम(257)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से जो ह़दीस वर्नण की है।

[4] इसे बोखारी(7288)और मुस्लिम(1337)ने अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है।

जो सीधा और सत्य हो)[5] ।खरीदने और बेचने में इस्लाम ने सत्य का आदेश दिया है,नबी सल्लल्लाहु हलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह तआ़ला ऐसे व्यक्ति पर कृपा करे जो बेचते समय और खरीदते समय और तकाज़ा करते समय उदारता एवं दयालुता से काम लेता है)[6] ।अर्थात वह अपने कर्जों का तक़ाज़ा करते समय फक़ीर व मुहताज पर सख्ती नहीं करता,बल्कि नरमी व दयालुता के साथ तकाजा करता है,और ग़रीब को मोहलत देता है,अल्लाह का कथन हैः

(وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة وأن تصدقوا خير لكم إن كنتم تعلمون).

अर्थातःऔर यदि कोई असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो।और अगर क्षमा कर दो(अर्थात दान कर दो)तो यह तम्हारे लिये अधिक अच्छा है,यदि तुम समक्षो तो।

इस्लाम की दयालुता ही है कि उस ने बुराई का बदला अच्छाई से देने पर प्रोत्साहित किया,अल्लाह का कथन हैः (ادفع بالتي هي أحسن)

अर्थातःआप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो।

इसी प्रकार इस्लाम ने कोध पर नियंत्रण रखने और अत्याचारी को क्षमा कर देने का आदेश दिया हैः (والكاظمين الغيظ والعافين عن الناس)

अर्थातःतथा कोध पी जाते,और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं।

इस्लाम की दयालुता का एक पक्ष यह भी है कि उसने मोमिनों के साथ विनम्रता और विनयशीलता अपनाने पर प्रोत्साहित किया,अल्लाह का कथन हैः

(**واخفض جناحك** لمن اتبعك من المؤمنين)

अर्थातःऔर झुका दें अपना बाहु उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों की विशेषता का उल्लेख करते हुए फरमायाः

---

[5] इसे बोखारी ने *كتاب الإيمان*,अध्यायः*الدين يسر*में तालीक़न(टिप्पणी के रूप में)वर्णित किया है,अह़मद ने अपनी मुस्नद(266/5)में अबू ओमामा रज़ीअल्लाहु अंहु से इन शब्दों के साथ रिवायत किया हैः(मैं सीधे और सत्य धर्म के साथ भेजा गया हूं)।

[6] इसे बोखारी(2076)ने जाबिर रजोअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

(**أذلة** على المؤمنين)

अर्थातःवह ईमान वालों के लिये कोमल होंगे।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपन लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

21.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अनुकंपा के लिए प्रोत्साहित करती है,अतः अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के प्रत्येक आदेश में दयालुता एवं अनुकंपा को अनिवार्य कर दिया है,यहां तक ज़बह़(वध)में भी,यही कारण ह कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़बह़ करते हुए अनुकंपा का ध्यान रखने का आदेश देते हुए फरमायाः(अल्लाह तआ़ला ने हर चीज में इह़सान(सुंदर व्यवहार करना)अनिवार्य किया है,अतः जब तुम हत्या करो[7]और जब ज़बह़ करो तो अच्छे से करो और जब तुम ज़बह़ करो तो अपनो छुरी को तेज़ कर लिया करो और ज़बीह़ा(शव)को(ज़बह़ करते समय)आराम पहुंचाओ)।[8]

[7] तो अच्छे प्रकार से करो अर्थात शरई रूप से जो हत्या के योग्य हो,उसकी हत्या करो,जैसे हत्यारा और विदरोही,और यह काम शासक की ओर से किया जाए।

[8] इसे मुस्लिम(745)ने **शद्दाद** बिन औस रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहि़महुल्लाह फरमाते हैंःयह इस बात का प्रमाण है कि हर स्थिति में अनुकंपा और दयालुता अनिवार्य है,यहां तक कि रक्त बहाते हुए भी चाहे मनुष्य का रक्त हो अथवा पशु का,अतः मनुष्य को चाहिए कि(कि़सास(दंड)ताज़ीर(धिग्दंड के रूप)में जब मनुष्य की हत्या करे तो इच्छे प्रकार से करे और पशु का रक्त बहाए तो अच्छे से बहाए[9]

इस्लाम धर्म में इह़सान(सुंदर व्यवहार)का उदाहरण यह भी है कि इसने मवेशियों के साथ नरमी करने पर उभारा है,अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूचना दी कि एक महिला क़यामत के दिन नरक में केवल इस लिए जाएगी कि उसने एक बिल्ली को बांध कर रखा,न तो उसे खाना खिलाया और न ही उसे आज़ाद छोड़ा कि वह पृथ्वी के कीड़े मकोड़ों से अपना पेट भर सके।[10]

मखलूक़ के प्रति अनुकंपा का सर्वोत्तम श्रेणी यह है कि माता पिता के साथ सुंदर व्यवहार किया जाए,शरीअ़त ने कुरान में छ स्थानों पर इस का आदेश दिया है और इसके विपरीत(माता पिता के अवज्ञा से)रोका है,उदाहरण स्वरूप अल्लाह तआ़ला का कथन देखेंः (وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا)

अर्थातःऔर (हे मनुष्य!)तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो,तथा माता पिता के साथ उपकार करो।

---

[9] الفتاوى الكبرى (549 / 5)

[10]

अल्लाह ने सामानय लोगों के साथ भी वार्ता में नरम धुन अपनाने का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है: (وقولوا للناس حُسنا وأقيموا الصلاة)

अर्थातःतथा लोगों से भली बात बोलोगे,तथा नमाज़ की स्थापना करोगे।

बल्कि इस्लाम ने उस क़ैदी के साथ भी सुंदर व्यवहार का आदेश दिया है जो मुसलमानों के विरूद्ध युद्ध में था किन्तु उन्के हाथों क़ैद हो गया,अल्लाह का फरमान है: (ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا)

अर्थातःऔर भोजन कराते रहे उस(भोजन)को प्रेम करने के बावजूद,निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:
  (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।

- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बडा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य।**
- हे हमार रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी